(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

# MANIFESTATION AND SHADOWISM OF NATIONAL AWAKENING

**Dr. Ranjana Kulshreshtha**

*Associate Professor, Th. Biri Singh College, Tundla, Firozabad, UP*

# *राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति और छायावाद*

***डॉ0 रंजना कुलश्रेष्ठ,***
***एसोसिएट प्रोफेसर,***
***ठा0 बीरी सिंह महाविद्यालय, टूण्डला***
***जिला–फरोजाबाद, उत्तर प्रदेश***

## ABSTRACT

*The seed-words of the expression of national awakening have been painted with love-pain in shadowism. In this poetic stream, to awaken the society, to remove the weakness in its meditation, to stand up for the struggle against the atrocities and the oppressors, songs were written to sacrifice oneself for the country. It is a poem of poetic movement that awakens the spirit of self-respect in a person, to use it, it is inspired to sacrifice one's life in order to attain pride. The voice of shadowist poets is the due reward of national, human, social, cultural and world brotherhood. On one hand, they want freedom of poetry and on the other hand they want India to be free from the shackles of subjugation.*

## *शोध.सार :*

*छायावाद में प्रेम–वेदना के साथ राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति के बीज–शब्द चित्रित हुए हैं। इस काव्यधारा में समाज को जाग्रत करने उसके मन की दुर्बलता को दूर करने, खुद को अत्याचारों तथा अत्याचारियों के विरूद्ध संघर्ष के लिए खड़े होने, देश के लिए खुद को बलिदान करने के गीत लिखे गए। इस काव्यांदोलन की कविता जो व्यक्ति में आत्मगौरव के भाव जाग्रत करती है तो उसे इस गौरव को प्राप्त करने के लिए खुद के प्राणों की आहुति देने के लिए प्रेरित भी करती है। छायावादी कवियों का स्वर राष्ट्रीय, मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा विश्व बन्धुत्व का सम्यक प्रतिफल है। वे एक तरफ तो कविता की मुक्ति चाहते हैं तो दूसरी तरफ भारत को पराधीनता के बंधनों से मुक्ति चाहते हैं।*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

## *प्रस्तावना :*

*छायावाद का समय 1918–1936 ई0 तक माना जाता है। मुकुटधर पांडेय ने 1920 में श्री शारदा पत्रिका के चार अंकों में 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से लेख लिखे। अतः हिन्दी साहित्य में 'छायावाद' शब्द का प्रथम लिखित प्रयोग मुकुटधर पांडेय द्वारा किया गया। छायावाद की प्रमुख विशेषताओं में स्वातंत्रय चेतना, वैयक्तिक्ता, वेदना की विवृत्ति, प्रेमानुभूति प्रकृति चित्रण, सौन्दर्य चेतना, राष्ट्रीय स्वर आदि दृष्टिगोचर होती हैं। छायावादी कवियों ने तात्कालिक समाज की व्यवस्था को ध्यान में रखा और जन सामान्य के जागरण के लिए व्यवस्था का सृजन किया। हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में बच्चन जी लिखते हैं कि 'मुक्ति का आग्रह, वैयक्तिकता, कल्पना, आवेश और अनुभूति की प्रखरता, रूढ़ियों का विरोध भाषा का लाक्षणिक प्रयोग आदि इस काल को पूर्ववर्ती काल से स्पष्टतः अलग कर देते हैं।'*

*इस युगधारा के काव्य में समाज को जानने, समझने तथा उसे कैसे दूर किया जाये इसका चित्रण किया गया है।*

## *विचार विमर्श :*

*राष्ट्रीय जागरण से अभिप्राय देश के जनमानस में देश के लिए किए जाने वाले उन कार्यों से है जो समाज में व्याप्त बुराइयों का उन्मूलन करने के लिए उद्धृत होते हैं। एक ऐसी दिशा जो देश के हर एक नागरिक में देश के लिए किये जाने वाले बलिदान के लिए प्रेरित करती है। समाज जो बुराइयों तथा अति अत्याचारों से त्रस्त हो कर खुद को संत्रासों से घिरा पाता है तथा जिसके हृदय में डर का माहौल व्याप्त होता है ऐसे समाज को इन बुराइयों से लड़ने तथा संघर्ष करने के लिए एक शक्ति की आवश्यकता होती है जो उसे प्रेरित कर सके, उसमें जीवन के प्रति नवीन संचार का प्रवाह कर सके। ये शक्ति उसे किसी जननायक या साहित्य से प्राप्त होती है।*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*भारत में बाह्य आक्रमणों और अंग्रेजी उपनिवेश के कारण देश की सांस्कृतिक व सामाजिक पहचान धुँधलाने लगी थी, जिसके परिणामस्वरूप भारत में राष्ट्रीय जागरण की शुरूआत हुई। 19वीं शताब्दी में 1857 ई0 का महाविद्रोह, राजा राममोहन राय के समाज सुधार कार्य, भारतेन्दु का आगमन, सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन तथा छायावादी युग में व्यक्त राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति का आरम्भ हुआ व सम्पूर्ण राष्ट्र में राष्ट्रीय जागरण के मूल्यों का प्रचार–प्रसार हुआ।*

*राष्ट्रीय जागरण की उत्पत्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोंण, समाज सुधार, देश के लिए समाज के कर्त्तव्य, देश–प्रेम की भावना का विकास और आदर्श समाज की परिकल्पना के चलते हुई। राष्ट्रीय जागरण से राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्षेत्र में एक नवीन चिन्तन प्रारम्भ हुआ। भारत में राष्ट्रीय जागरण का उद्देश्य सामान्य जन के स्वाभिमान को जाग्रत करना तथा सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक क्षेत्र में खुद के मूल अधिकारों को प्राप्त कर स्वतन्त्रता प्राप्त करना था।*

*ऐतिहासिक दृष्टि से जिसे गाँधी युग की संज्ञा से विभूषित किया जाता है साहित्यिक दृष्टि से उसे ही छायावादी युग कहा जाता है। सामान्य अर्थ में हम कह सकते हैं कि गाँधीयुग की मिट्टी में छायावादी युग अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित हुआ। गाँधीयुग राष्ट्रीय जागरण का उत्कर्ष काल था।*

*नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद को अभिव्यक्ति की एक लाक्षणिक प्रणाली के रूप में स्वीकार किया है तो आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने शैली की पद्धति मात्र के रूप में अपनाया है। डॉ0 नगेन्द्र ने जिसे, स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहा है उसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने रहस्यवाद की भूल–भुलैया बताया है।*

*प्रवृत्ति को आधार मानकर आलोचकों ने छायावाद को समझने–समझाने का प्रयास किया। विभिन्न विद्धानों की परिभाषाएँ छायावाद के सन्दर्भ में या तो अपूर्ण हैं या एकांगी। छायावाद के सम्बन्ध में डॉ0 नामवर सिंह जी ने अपनी रचना (छायावाद) में नया दृष्टिकोण*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*प्रस्तुत किया है। डॉ0 नामवर सिंह के शब्दों में– **''छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और जो दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से इस जागरण में जिस तरह क्रमशः विकास होता गया, इसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी विकसित होती गई और इसके फलस्वरूप छायावाद संज्ञा का भी अर्थ विस्तार होता गया।''1***

*डॉ0 नामवर सिंह की यह परिभाषा उस पूर्व निर्धारित धारणा को बदलकर रख देती है कि छायावाद प्रेम विरह का काव्य है।*

*छायावाद के संदर्भ में बच्चन जी अपने ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में लिखते हैं **''चाहे कांग्रेसियों का सत्याग्रह–आन्दोलन हो या क्रान्तिकारियों का सशस्त्र विद्रोह–सब–के–सब स्वच्छन्दतावादी थे। स्वच्छन्दता की मूल प्रवृत्तियाँ–वैयक्तिकता, आवेगमयता, मानवीयता, देश–प्रेम, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक रूढ़ियों का विरोध आदि–राष्ट्रवादी आन्दोलनों में भी थे। इन सभी विशेषताओं को मुक्ति का आग्रह कहा जा सकता है।''2***

*उपर्युक्त वक्तव्य छायावाद को राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति के रूप में वर्णित करता है।*

*'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' नामक अपनी पुस्तक में रामस्वरूप चतुर्वेदी जी छायावाद को शक्तिकाल के रूप में प्रस्तुत करते हुए छायावादी रचनाओं में ज्योति और जागरण की अभिव्यक्ति को रेखांकित करते हुए कहते हैं– **''अपने व्यक्तिगत प्रणय और राष्ट्रप्रेम की अनुभूति में और उनके संश्लेषण में छायवाद मूलतः शक्ति–काव्य है।''3.***
*आचार्य रामचन्द्र शुक्ल छायावाद को तृतीय उत्थान के नाम से अभिहित करते हुए कहते हैं– **''तृतीय उत्थान में आकर परिस्थिति बहुत बदल गई, आंदोलनों ने सक्रिय रूप धारण***

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

***किया और गांव–गांव में राजनीतिक और पार्थिक परतंत्रता के विरोध की भावना जगाई गई।''4***

*रामस्वरूप चतुर्वेदी, नामवर सिंह, बच्चन सिंह तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद में राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति पर बहुत अधिक महत्व दिया है।*

*छायावादी कवियों की राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी लिखते हैं–* ***''सरकार से कुछ माँगने के स्थान पर अब कवियों की वाणी देशवासियों को ही 'स्वतंत्रता देवी की वेदी पर बलिदान' होने को प्रोत्साहित करने लगी।''5***

*छायावादी कवियों ने हकीकत में सोये हुए जन–समाज को जाग्रत करने हेतु जोशीले स्वर में राष्ट्रीय जागरण तथा देश–प्रेम के गीत भी खूब लिखे हैं।*

*जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों में लिखे गीत प्रायः देश–प्रेम तथा राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति के गीत हैं, जो समाज में जाग्रति की भावना का प्रचार और प्रसार करते हैं।*

*प्रसाद जी के नाटक (चन्द्रगुप्त मौर्य) में सिन्धु के किनारे ग्रीक शिविर के पास वृक्ष के नीचे बैठी कार्नेलिया सिन्धु के मनोहर तट को देखकर गाती है–*

***''अरूण यह मधुमय देश हमारा***
***जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।''6***

*प्रसाद जी ने यह गीत कार्नेलिया से गवा कर भारत देश का मनोहारी चित्र खींचा है। जो भारत के समाज में देश के प्रति प्रेम को आह्लादित कर देता है तथा भारत के लोगों को सोचने पर मजबूर करता है कि वे उस देश के वासी हैं जिसका गुणगान विदेशी भी करते हैं।*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*प्रसाद जी कृत चन्द्रगुप्त मौर्य नाटक में एक समवेत गायन है–*

***"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,***
***प्रबुद्ध शुद्ध भारती–***
***स्वंय प्रभा समुज्ज्वला***
***स्वतंत्रता पुकारती–***
***अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो,***
***प्रशस्त पुण्य पथ है–बढ़े चलो बढ़े चलो।"7***

*उपर्युक्त गीत सुप्त समाज के हृदय को आन्दोलित करता है तथा राष्ट्रीय जागरण के लिए प्रेरित करता है। देश की रक्षा के लिए जन जन अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए तत्पर हो उठता है।*

*प्रसाद जी के नाटक 'स्कन्द गुप्त' का गीत 'हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार' आत्म–गौरव का जोशीला उद्‌बोधन है। प्रसाद जी की नजर में भारत देश विभिन्न संस्कृतियों की जननी है। महाराणा प्रताप का स्वाभिमान, गाँधी जी का सत्य अहिंसा परमोधर्म:, अशोक महान का अखण्ड भारत का निर्माण और फिर करूणा पूर्ण हृदय परिवर्तन की प्रदात्री भारत–भूमि ही है। प्रसाद जी की कविता 'पेशोला की प्रतिध्वनि' में जो चित्रण है वह प्रतीकात्मक है जिसमें कवि ने भारतीयों को राष्ट्रीय जागरण के लिए प्रेरित तथा जाग्रत किया है। 'अपलक जगती रहो एक रात', 'अब जागो जीवन के प्रभात', शेर सिंह का शस्त्र समर्पण आदि विविध कविताओं के द्वारा प्रसाद जी ने शक्ति का आह्‌वान किया है। कवि ने समाज को व्यक्तिगत प्रेम के साथ देश–प्रेम के भाव का सम्मिलित स्वरूप प्रदान किया है। कवि ने चैतन्य तथा शक्ति के आह्‌वान को सम्मुख रखकर जो गीत रचना की है वे तात्कालिक स्वाधीनता की चिंता, राष्ट्र के संदर्भ आदि से पल्लवित है।*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*छायावाद युग के समय देश में सत्ताधारी ऐसे लोग थे जो कि अत्याचारी तथा क्रूर थे जो आम जन–मानस को परेशान व प्रताड़ित करते रहते थे। ऐसे युग को जाग्रत करते हुए तथा उमंग की परिस्थिति का चित्रण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी ने अपनी कविता 'राम की शक्ति पूजा' में इस प्रकार व्यक्त किया है–*

***"अन्याय जिधर है उधर शक्ति।"8***

*वे जनता को इस शक्ति से अवगत कराते हैं, शक्ति के प्रति जन–जागरण के गीत लिखते हैं तथा आम जन.मानस को बताते हैं कि यह शक्ति तुम्हारे अन्दर भी है। यह शक्ति तुम्हें इन अत्याचारियों से मुक्ति दिलाने में तुम्हारी सहायक होगी। यह शक्ति मौलिक है इसे जाग्रत करो।*

*निराला ने अपनी कविता 'जागो फिर एक बार' मै समाज को जगाने का भाव व्यक्त किया है। वे लोगों से आह्वान करते हुए कहते हैं–*

***"शेरों की मांद में***
***आया है आज स्यार***
***जागो फिर एक बार।" 9***

*निराला जी ने व्यक्ति के आत्म–प्रत्यय को झंकृत करने वाली कई कविताएँ लिखीं जो कि उस समय के समाज के लिए बहुत आवश्यक थीं। इनके जागरण गीतों में तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, जागा दिशा ज्ञान, जागो जीवन धानिके, प्रिय मुदित दृग खोलो, राम की शक्ति पूजा आदि हैं।*

*छायावाद की कवि चतुष्टय में शामिल महादेवी वर्मा कहती हैं–*

***"मैं अनंत पथ में लिखती जो***
***सस्मित सपनों की बातें,***

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

***उनको कभी न धो पाएँगी***
***अपने आँसु से रातें।''10***

*महादेवी वर्मा जी के गीत मानव हृदय के अन्धकार को दूर कर उसे आलोकित करने के गीत हैं। इनके गीतों में खुद को निछाबर कर दूसरों को सुख प्रदान करना चित्रित होता है।*

*आचार्य रामचन्द्र शुक्ल छायावाद (तृतीय उत्थान) बारे में लिखते हैं– **''श्री रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी आदि कई कवियों की वाणी द्वारा ये भिन्न–प्रकार के आन्दोलन प्रतिध्वनित हुए।''11***
*दिनकर जी की कविताएँ जहाँ समाज में नवीन जागरण का संदेश देती हैं तो माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएँ (पुष्प की अभिलाषा) जन.जागरण का संदेश देती हैं।*

*बच्चन सिंह अपने हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में लिखते हैं– **''गीतिका का प्रथम गीत 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' शिक्षित समाज का कंठहार बन चुका है। यह सामान्य मंगल गीत नहीं है, एक राष्ट्रीय गीत है। एक पंक्ति में कहा गया है 'प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मन्त्र नव/भारत में भर दे' तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में यह नया अमृत मंत्र था।''12***
*छायावादी काव्य में राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति पूर्ण प्रतिध्वनित होती प्रतीत होती है। इसमें जन–जागरण के विविध रूप विद्यमान हैं। छायावादी रचनाएँ राष्ट्र, समाज, व्यक्ति तथा विश्व को एक नवीन दृष्टिकोंण प्रदान करती हैं तथा जन–सामान्य में नवीन चेतना का प्रचार–प्रसार तथा विकास करती हैं। इस काव्यांदोलन ने समाज के हर वर्ग में देश–प्रेम, बन्धुत्व, आपसी भाईचारे, तथा समन्वय का संचार कर अत्याचारियों के विरूद्ध उठ खड़े होने तथा उनसे सामना करने की शक्ति प्रदान की। यह शक्ति नये भारत के*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*निर्माण तथा परिवर्तित होते समाज के लिए अमोघ तथा असीम सिद्ध हुई और इसी शक्ति ने आगे चलकर भारत को स्वतंत्रता का सवेरा दिखाया तथा भारत परतन्त्र की बेड़ियों को तोड़ सका।*

## *निष्कर्ष :*

*इस प्रकार कहा जा सकता है कि छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक संवेदन की अभिव्यक्ति हुई है तथा भारत की वर्तमान बदतर स्थिति का भी चित्रण किया गया है। छायावादी कवियों ने उस विडंबना की ओर भी संकेत किया है कि इस भारत का अतीत कितना वैभवशाली तथा गौरवशाली था जिसे विश्वगुरू की उपाधि मिली थी उसका वर्तमान स्वरूप कितना गौरवहीन तथा शोकग्रस्त है। भारतवासियों को इस गर्व से निकालने के गीत छायावादी काव्य में देखे जा सकते हैं। छायावादी कवि राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति के मुख्य स्रोत रहे हैं।*

*इन कवियों ने सोये हुए समाज को भारत के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना तथा उसे साकार करने के लिए आवश्यक शक्ति की मौलिक कल्पना का मार्ग प्रशस्त किया है।*

*अंधविश्वासों, गुलामी की परिपाटी को तोड़ने, तथा मन की दुर्बलता को दूर करने की अपार शक्ति छायावादी काव्य में व्याप्त है। अतः छायावादी काव्य राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति का काव्य है।*

## *संदर्भ.ग्रन्थ :*

1. *सिंह नामवर, छायावाद,पृष्ठ,17*
2. *सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,पृष्ठ,333*
3. *चतुर्वेदी रामस्वरूप, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास,पृष्ठ,114*
4. *शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास,पृष्ठ,440*
5. *वही,पृष्ठ,441*
6. *प्रसाद जयशंकर, चन्द्रगुप्त मौर्य,पृष्ठ,47*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

*7. वही,पृष्ठ,177*
*8. चतुर्वेदी रामस्वरूप, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृष्ठ 110*
*9. निराला, राग–विराग,पृष्ठ,58*
*10. वर्मा महादेवी, महादेवी,पृष्ठ,56*
*11. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास,पृष्ठ,441*
*12. सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,पृष्ठ,348*

## REFERENCES

1. Singh Namwar, Chhayawad, pg 17
2. Singh Bachchan, Hindi Sahitya ka Doosra Itihaas, pg 333
3. Chaturvedi Ramswaroop, Hindi Sahitya AurSamvedna ka Vikas, pg 114
4. Shukl Ramchandra, Hindi Sahitya ka Itihaas, pg 440
5. Ibid, pg 441
6. Prasad Jaishankar, Chandragupta Maurya, pg 47
7. Ibid pg 177
8. Chaturvedi Ramswaroop, Hindi Sahitya Aur Samvedna ka Vikas, pg 110
9. Nirala, Raag-Viraag, pg 58
10. Verma Mahadevi, Mahadevi, pg 56
11. Shukl Ramchandra, Hindi Sahitya ka Itihaas, pg 440
12. Singh Bachchan, Hindi Sahitya ka Doosra Itihaas, pg 348